दान देने के लिए, ज्ञान लेने के लिए और त्यागने के लिए अभिमान सर्वश्रेष्ठ है।
– अज्ञात

वैश्विक अर्थव्यवस्था को झटका

यदि वायरस दुनिया में व्यापक तौर पर फैल जाता है और गर्मी में भी इसका असर बरकरार रहता है तो यह वृद्धि 2.9 प्रतिशत के अनुमान की लगभग आधी, यानी 1.5 प्रतिशत तक भी पहुंच सकती है।

सुधा रोतैला।

कोरोना वायरस इंसानों को ही नहीं, विश्व अर्थव्यवस्था को भी बीमार कर रहा है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) ने सोमवार को जारी एक विशेष रिपोर्ट में कहा है कि कई देशों में कोविड–19 बीमारी फैलने से वैश्विक अर्थव्यवस्था मौजूदा तिमाही में एक बड़े झटके से गुजर सकती है, जो 2009 में आई मंदी के बाद पहली बार होगा।

हालांकि 2020 के लिए ओईसीडी ने वैश्विक आर्थिक वृद्धि के अपने अनुमान को करीब आधा प्रतिशत ही घटाया है, लेकिन यह भी कहा है कि यदि वायरस दुनिया में व्यापक तौर पर फैल जाता है और गर्मी में भी इसका असर बरकरार रहता है तो यह वृद्धि 2.9 प्रतिशत के अनुमान की लगभग आधी, यानी 1.5 प्रतिशत तक भी पहुंच सकती है। विश्व बैंक पहले ही कोरोना की वजह से ग्लोबल ग्रोथ रेट में एक फीसद तक की गिरावट की आशंका जता चुका है। कोरोना की वजह से दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं चीन और अमेरिका के कारोबार में सुस्ती गहरा रही है, जिसका असर पूरी दुनिया पर पड़ना तय है।

चीन ग्लोबल स्तर पर विभिन्न जिंसों (कमोडिटीज) का सबसे बड़ा खरीदार है। वहां मांग में कमी के कारण विश्व स्तर पर कच्चा तेल, तांबा, सोयाबीन जैसे कई उत्पाद सस्ते हो जाएंगे लेकिन जिन देशों की अर्थव्यवस्थाएं चीन को इन चीजों की आपूर्ति पर निर्भर करती हैं उनकी, खासकर लैटिन अमेरिका के कई देशों की हालत खराब हो जाएगी। मूडीज एनालिटिक्स की रिपोर्ट में कहा गया है कि कोविड–19 से जुड़ी खबरों और आशंकाओं के चलते दुनिया भर का टूरिज्म प्रभावित हो रहा है। चीन का पर्यटन कारोबार पूरी तरह से ठप है। विदेशी उड़ानें चीन नहीं जा रही हैं और क्रूज यात्राएं भी रद्द हैं। दूसरी तरफ 30 लाख चीनी हर साल अमेरिका घूमने जाते हैं। इटली में बीमारी फैलने से पर्यटक अब यूरोप जाने से भी कतराने लगे हैं, जिससे वहां का पर्यटन उद्योग प्रभावित हो रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन में फैक्ट्रियों के बंद होने से ऐपल, नाइकी और जनरल मोटर्स जैसी बड़ी कंपनियां प्रभावित हो रही हैं।

माल की कमी के चलते अमेरिका के वॉलमार्ट और अमेजन स्टोर में अगले एक–दो महीने में सभी सामानों की कीमतें बढ़ जाएंगी। अमेरिका की विकास दर 2020 में 0.2 फीसद की गिरावट के साथ 1.7 फीसद रहने का अनुमान है। अपना लगभग एक तिहाई व्यापार अमेरिका और चीन के साथ ही करने वाला भारत भी इस आर्थिक संकट से अछूता नहीं रहेगा। चीन से आयात होने वाली जिन चीजों पर भारतीय उद्योग निर्भर हैं उन्हें लेकर भी दिक्कतें शुरू हो गई हैं।

कच्चे माल की कमी और उत्पादन लागत बढ़ने से हमारे निर्यात की मुश्किलें और बढ़ सकती हैं। हालांकि कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार हमारी विकास दर पर कोरोना के असर की बात करना अभी जल्दबाजी होगी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का कहना है कि सरकार इस मामले में सतर्क है और हर स्तर पर विकल्प तलाशे जा रहे हैं।

प्रचलन

अशोक वोहरा। आस्था से जुड़ी यात्रा आज के दौर में प्रचलन में है। अमृतसर में आईटीसी होटल ने पिछले दिसंबर में "वेलकम होटल अमृतसर" लॉन्च किया है। गोल्डन टेंपल के प्रति आस्था को देखते हुए इस होटल को श्रद्धालुओं के लिए लॉन्च किया गया था और अब यह लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हो गया है। आईटीसी होटल के सीओओ अनिल चड्ढा के मुताबिक अगले कुछ सालों में वह कटरा, कोणार्क और पुष्कर में भी इसी प्रकार के होटल लॉन्च करने वाले हैं। 2018 में ताज मक्का और 2019 में ताज ऋषिकेश रिसॉर्ट एंड स्पा लॉन्च करने के बाद आईएचसीएल ने पिछले साल नवंबर में 'ताज तिरुपति' लॉन्च करने का निर्णय लिया था। लेमन ट्री भी ऋषिकेश में अपने होटल लॉन्च कर रहा है। इतना ही नहीं रेड फॉक्स ऋषिकेश के बाहर नीलकंठ में श्रद्धालुओं को अपनी सर्विस देने की योजना बना चुका है।

धर्म-दर्शन

संपादकीय

किसी कानून के खिलाफ

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद ने संशोधित नागरिकता कानून (सीएए) पर सुप्रीम कोर्ट में हस्तक्षेप याचिका दायर की है। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त मिशेल बैश्लेट जेरिया की ओर से दायर इस याचिका में कहा गया है कि वह इस मामले में मानवाधिकारों की रक्षा करने, उसे बढ़ावा देने और उस संबंध में आवश्यक वकालत करने के लिए मिले अधिदेश (मैंडेट) के आधार पर न्यायमित्र (तीसरे पक्ष) के तौर पर हस्तक्षेप करना चाहती हैं। उनकी दलील है कि भारत जनतंत्र और मानवाधिकारों के मामले में सभी अंतरराष्ट्रीय मानदंडों का पालन करता रहा है और भारतीय संविधान जनतंत्र और समानता का पक्षधर है, लेकिन यह कानून कहीं न कहीं इन मूल्यों से मेल नहीं खाता। कोर्ट से उनका आग्रह इस बात की जांच करने का है कि यह कानून जनतांत्रिकता और हर किसी को समान नजरिए से देखने की मूल भावना के अनुरूप है या नहीं। ऐसा पहली बार हुआ है जब यूएनएचआरसी ने भारत के किसी कानून के खिलाफ उसकी शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाया है। इसके पहले 27 फरवरी को यूएनएचआरसी उच्चायुक्त कार्यालय ने अपनी रिपोर्ट में कश्मीर और सीएए, दोनों पर गहरी चिंता जताई थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि 'भारत में बहुत बड़ी तादाद में लोगों ने सीएए का विरोध किया है और इनमें सभी समुदायों के लोग शामिल हैं। यह विरोध मोटे तौर पर शांतिपूर्ण रहा है मगर चिंता की बात है कि पुलिस ने इन विरोध प्रदर्शनों से निपटने में ज्यादतियां की हैं। इसके बाद सांप्रदायिक दंगे हुए, जिनमें लोग मारे गए हैं।' मानवाधिकार उच्चायुक्त ने यह रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद को सौंपी है।

सुपर ट्यूजडे यानी मार्च के दूसरे मंगलवार को डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से राष्ट्रपति का उम्मीदवार चुनने के लिए सबसे ज्यादा राज्यों में वोटिंग होती है।

बाइडेन और सैंडर्स के बीच मुकाबला

नवीन शाह।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव का परिदृश्य साफ होने लगा है। रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की उम्मीदवारी तय है, जबकि डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से उम्मीदवारी के लिए मुकाबला पूर्व उपराष्ट्रपति जो बाइडेन और सीनेटर बर्नी सैंडर्स के बीच है। बीते 3 मार्च को 14 राज्यों में हुए सुपर ट्यूजडे प्राइमरीज में डेमोक्रेटिक पार्टी के आम सदस्यों की ओर से सबसे ज्यादा समर्थन बराक ओबामा के नायब जो बाइडेन को मिला है। बाइडेन ने 10 राज्यों में जीत हासिल की, जबकि सीनेटर बर्नी सैंडर्स को चार में सफलता मिली। सुपर ट्यूजडे यानी मार्च के दूसरे मंगलवार को डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से राष्ट्रपति का उम्मीदवार चुनने के लिए सबसे ज्यादा राज्यों में वोटिंग होती है।

इस बीच डेमोक्रेटिक दायरे के तीसरे उम्मीदवार, न्यूयॉर्क के पूर्व मेयर अरबपति माइक ब्लूमबर्ग ने बाइडेन को अपना समर्थन देने का ऐलान कर दिया है। अपना दावा छोड़ते हुए ब्लूमबर्ग ने कहा, 'हमेशा से मेरा यही मानना रहा है कि डॉनल्ड ट्रंप को हराने के लिए बेस्ट कैंडिडेट चुनना जरूरी है। कल की वोटिंग के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि वह कैंडिडेट मेरे

दोस्त और महान अमेरिकी जो बाइडेन हैं।' चुनाव में उतरे दो और सीनेटरों एमी क्लोबुशर और पूर्व मेयर पीट बुटिगीज ने भी बाइडेन को अपना समर्थन दे दिया है। अभी बाइडेन की जीत को अमेरिका के राजनीतिक इतिहास का सबसे शानदार कमबैक माना जा रहा है।

हफ्ता भर पहले आयोवा, न्यू हैंपशायर और नेवाडा में उनका प्रदर्शन कमजोर रहा था और तीनों राज्यों में बर्नी को जीत मिली थी। बाइडेन की जीत का सिलसिला शनिवार को साउथ कैरोलिना से शुरू हुआ जो सुपर ट्यूजडे के दौरान भी जारी रहा। वह पांच ऐसे राज्यों में जीते हैं, जहां उन्होंने प्रचार न के बराबर ही किया था।

प्राइमरी चुनाव में बर्नी को काफी कम सीटों से जीत मिलने के बाद डेमोक्रेट्स में यह चर्चा जोर पकड़ने लगी है कि उनके जैसा उग्र सोशलिस्ट ट्रंप को टक्कर दे पाएगा या नहीं। सैंडर्स की पहचान अपने प्रखर समाजवादी विचारों को लेकर है। अपने चुनाव प्रचार में उन्होंने कॉलेजों में ट्यूशन फीस माफ करने, सभी के लिए सरकारी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने, सैन्य खर्चों में कटौती और देश में न्यूनतम मजदूरी 15 डॉलर (लगभग 750 रुपया) प्रति घंटा करने जैसे वादे किए हैं और इसके लिए अमेरिका के बड़े पूंजीपति वर्ग पर सख्ती बरतने की बात कही है। उनके ये विचार गरीब और युवा अमेरिकी वोटरों को आकर्षित करते रहे हैं। उनके विपरीत बाइडेन खाते–पीते मध्यवर्ग को संबोधित करते रहे हैं।

उनका कहना है कि आज वह सब कुछ दांव पर है, जिसने अमेरिका को अमेरिका बनाया है और वे उन सभी चीजों को पुनर्स्थापित करने के लिए ही चुनाव लड़ रहे हैं। देखें, अंतिम लड़ाई के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी बीच के रास्ते में भरोसा जताती है या तीखे टकराव का रास्ता अपनाती है।

सूडोकु नवताल-5260

सरल

	7	9	4	2		6		3
	6		8		7		2	
4	1				3	5	8	
	9	8	3					
7		4		5		8		1
					9	7	3	
	8	5	7				4	6
	2		9		1		5	
3		1		6	8	9	7	

Jagrutidaan.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल-5259 का हल

8	9	5	1	3	7	2	4	6
7	3	2	6	5	4	1	8	9
1	6	4	8	9	2	7	5	3
5	7	3	4	2	9	6	1	8
4	2	8	5	6	1	3	9	7
6	1	9	3	7	8	5	2	4
3	5	1	9	4	6	8	7	2
2	4	6	7	8	5	9	3	1
9	8	7	2	1	3	4	6	5

अपना ब्लॉग

विदेशी धरती पर सिर्फ हिंदी

मोहन। विदेशी धरती पर सिर्फ हिंदी नहीं उसकी क्षेत्रिय भाषाओं का भी जलवा कायम रहा है। आपको याद होगा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब अपनी अमेरिकी यात्रा पर गए थे तो तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा ने गुजराती भाषा में 'केम छो मिस्टर मोदी' से स्वागत किया था। जब अमेरिका में आम चुनाव हो रहे थे तो वहां भी 'अबकी बार ट्रम्प सरकार' की गूंज सुनाई दी थी। भारत में गढ़ा इस चुनावी जुमले का इस्तेमाल खुद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने किया था। भारत में 2014 के आम चुनाव में यह चुनावी नारा खूब गूंजा था अबकी बार मोदी सरकार। हिंदी की अहमियत और ग्लोबल स्वीकार्यता तेजी से बढ़ रही है। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी अहम योगदान है। जबकि इससे पूर्व भारत के कई राजनेता वैश्विक मंच पर हिंदुस्तान और हिंदी का मान बढ़ाते आए हैं। प्रधानमंत्री अपनी विदेश यात्राओं में हिंदी का खुल कर प्रयोग करते रहे हैं। हिंदी को 'ग्लोबल' बनाने में भी खास योगदान रहा है। अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान ट्रम्प से मुलाकात में उन्होंने हिंदी में भाषण दिया था।